शिक्षक की जवाबदेही

निमरत खंदपुर

अकसर यह माना जाता है कि बच्चों के सीखने, न सीखने के लिए सिर्फ़ शिक्षक ज़िम्मेदार है। लेकिन उन पहलुओं और स्थितियों पर नज़र नहीं डाली जाती जो शिक्षक की जवाबदेही को प्रभावित करते हैं। यह लेख विभिन्न देशों में शिक्षक की जवाबदेही को सुनिश्चित करने के लिए की गई विभिन्न पहलों का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है। लेख इस तरफ़ भी इशारा करता है कि हमारे देश के सन्दर्भ में इनमें से कौन-से प्रयास मददगार हो सकते हैं। सं.

अकसर जब शिक्षकों के बारे में चर्चा होती है, तो सुनने को मिलता है कि :

- हमारे बच्चे सीख नहीं रहे, और यह शिक्षकों की ग़लती है।
- समुदाय को शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करनी चाहिए।
- शिक्षक उदासीन व्यक्ति हैं जो अकसर विद्यालय से ग़ायब रहते हैं। अगर विद्यालय में हैं भी, तो ज़्यादातर कक्षा के बाहर पाए जाते हैं। और अगर कभी मिलें भी, तो न उनको विषय की जानकारी होती है न सीखने-सिखाने की।
- शिक्षक बनना ज़्यादातर एक आख़िरी विकल्प है, इसलिए वह अपने काम में दिलचस्पी नहीं लेते हैं।
- अगर शिक्षक पढ़ाते हैं तो बच्चे सीखते हैं। अगर बच्चे परीक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन नहीं करते, तो इसके लिए शिक्षक ज़िम्मेदार हैं।

इन सब कथनों से लगता है कि बच्चों के सीखने की जवाबदेही केवल शिक्षकों की है, और यह भी कि शिक्षक इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए प्रेरित नहीं हैं। बच्चों की उपलब्धि के आधार पर शिक्षक की जवाबदेही तय करना उचित भी लगता है– कई देशों में उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण कर शिक्षकों की पदोन्नति का निर्णय लिया जाता है; उन्हें बर्ख़ास्त भी किया जा सकता है। लेख में आगे इन सन्दर्भों का विवरण दिया गया है।

उपलब्धि के आधार पर शिक्षक की जवाबदेही चिह्नित करने और तय करने की प्रक्रिया पर कई सवाल उठाए गए हैं, ख़ासकर इसलिए क्योंकि इस बात का कोई ठोस सबूत नहीं है कि जिन बच्चों की उपलब्धि कम है वह 'कमज़ोर' शिक्षकों से पढ़ाए गए हैं या ज़्यादा 'प्रभावी' शिक्षकों के पढ़ाने से उनकी उपलब्धि बढ़ जाएगी। कई शोध ऐसे प्रमाण उपलब्ध कराते हैं कि उपलब्धि-आधारित जवाबदेही शिक्षकों के मनोबल को चोट पहुँचाती है, और अकसर उन्हें काम छोड़ने पर मजबूर करती है, हालाँकि हमारे देश में स्थिति कुछ अलग है।

उपलब्धि-आधारित जवाबदेही वाला विचार दो अन्य कारणों के आधार पर भी ग़लत साबित हो सकता है। पहला, बच्चों का सीखना कई कारकों पर निर्भर है, और ये कारक एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। जैसे– विद्यालय में शिक्षक को

छोड़कर, मूलभूत सुविधाएँ, कक्षा का आकार, पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या, सीखने-सिखाने की सामग्री, विद्यालय का नेतृत्व और शिक्षक की स्वायत्तता, ख़ासकर शिक्षणशास्त्र और पाठ्य सामग्री का चयन, आदि। साथ ही, बच्चों का सामाजिक और आर्थिक सन्दर्भ, माता-पिता का शैक्षिक स्तर, प्रारम्भिक बाल्यावस्था में शिक्षा, बच्चों की रुचि, आदि भी अधिगम को प्रभावित करते हैं। ये कारक अपने-आप में काफ़ी जटिल हैं और फिर इनका अन्तर्सम्बन्ध इतना जटिल है कि केवल बच्चों के सीखने / न सीखने से शिक्षक की जवाबदेही तय करना बिलकुल सही नहीं है।

इस बात में कोई सन्देह नहीं कि शिक्षक की प्राथमिक जवाबदेही बच्चों के सीखने की तरफ़ है। परन्तु इस बात पर विचार करना भी आवश्यक है कि जवाबदेही पूरी करने के लिए शिक्षक को किस प्रकार के समर्थन, और किन साधनों एवं क्षमताओं की ज़रूरत है। अगर शिक्षक को यह समर्थन, साधन और सुविधाएँ नहीं मिलतीं, क्या तब भी शिक्षक ही जवाबदेह होगा?

पहले शिक्षक समर्थन

इस विषय पर सन्दर्भ सामग्री का अध्ययन करने पर कुछ अहम पहलू उभरकर आते हैं। पहला, शिक्षकों का कार्य बेहतर करने में उनका अपने सहकर्मियों के साथ सहकार्य और शैक्षिक प्रक्रियाओं एवं अपनी समस्याओं पर मिलकर चिन्तन केवल उपलब्धि के आधार पर निरीक्षण से कहीं अधिक प्रभावी है।

इसे मुमकिन करने के लिए विद्यालय में शिक्षक समर्थन का वातावरण और स्वायत्तता ज़रूरी हैं। जहाँ शिक्षकों को यह स्पष्ट है कि उनसे क्या अपेक्षाएँ हैं और इनकी शैक्षिक प्रक्रियाओं को बेहतर करने में क्या भूमिका है। जहाँ शिक्षकों की भागीदारी है, और वह केवल ग्रहण करने की भूमिका में नहीं हैं। जहाँ शिक्षकों को स्वायत्तता है– पठन-पाठन सामग्री का चयन या उन्हें विकसित करने की, पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शैक्षणिक प्रक्रियाओं का चयन करने की, अवलोकन एवं मूल्यांकन प्रक्रियाओं को निर्धारित और बच्चों को भी सीखने में स्वायत्तता प्रदान करने की। अपितु यह भी तभी मुमकिन होगा जब शिक्षक में शैक्षिक समझ हो, जो न केवल सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा में विकसित होती है परन्तु अनुभव से और गहरी व व्यापक होती है।

एक शिक्षक की जवाबदेही हमेशा ऐसी परिस्थितियों में ही स्वाभाविक है। नहीं तो शिक्षक की जवाबदेही केवल ‘ऊपर’ से भेजे हुए प्रारूपों और रूपरेखाओं की तरफ़ होगी। दस्तावेज़ों के माध्यम से शैक्षिक प्रणाली को यह भरोसा होता है कि शिक्षकों की जवाबदेही स्थापित हो रही है। परन्तु इन परिस्थितियों में शैक्षिक बदलाव मुमकिन नहीं है क्योंकि शिक्षक उन्हीं पुरानी ‘भरोसेमन्द’ प्रणालियों से काम करते हैं एवं उनके पास और कोई विकल्प नहीं है।

प्रश्न यह है, अगर ऐसी परिस्थितियाँ हों तो शिक्षकों की जवाबदेही को सुनिश्चित करने के लिए क्या तरीक़े हों? जिन देशों में यह करने की कोशिश की गई है, अगले भाग में उनका संक्षिप्त विवरण है।

जवाबदेही कैसे सुनिश्चित की जाती है?

फ़िनलैंड में सामूहिक जवाबदेही की व्यवस्था है, जहाँ शिक्षकों की ज़िम्मेदारी न केवल अपने विद्यार्थियों के प्रति है, अपितु विद्यालय, अभिभावकों और एक दूसरे के प्रति भी है। केवल बच्चों की उपलब्धि के आधार पर उनका मूल्यांकन नहीं होता, और एक समूह के रूप में प्रधान अध्यापक और शिक्षकों की जवाबदेही होती है। क़रीब 30 साल पहले विद्यालय निरीक्षण की प्रक्रिया को समाप्त कर दिया गया था। विद्यालय में शिक्षक और प्रधान अध्यापक परामर्श और रचनात्मक प्रक्रिया के आधार पर सीखना-सिखाना बेहतर करने का प्रयास करते हैं। इस साझी भागीदारी का नतीजा आपसी विश्वास का वातावरण और बेहतरी की तरफ़ लगातार प्रयास हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका में मानकीकृत परीक्षण (standardized testing) के आधार पर शिक्षकों का मूल्यांकन कई सालों से हो रहा है– 1960 में आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के बच्चों की उपलब्धि को लेकर चिन्ता से यह प्रक्रिया शुरू हुई। देश के सभी बच्चों की एक तरह की परीक्षा लेते हैं– व्यक्तिगत अन्तर को नज़र में रखने की कोई गुंज़ाइश नहीं है। ज़्यादातर बहुविकल्पीय प्रश्न या एक शब्द के उत्तर वाले प्रश्न, आदि पूछे जाते हैं। इस प्रक्रिया की काफ़ी आलोचना की गई है। हालाँकि सोच यह है कि बच्चों के सीखने के स्तर को समझकर शैक्षणिक प्रक्रियाओं को सुधारने का यह एक भरोसेमन्द साधन है। परन्तु इन परीक्षाओं में मूल्यांकन केवल पाठ्यक्रम के उन हिस्सों का होता है जो एक लिखित परीक्षा से आँके जा सकते हैं। ज़्यादातर प्रश्न ऐसे होते हैं, जिनका परीक्षण और विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है। और इसका परिणाम है कि अमूमन शिक्षक भी वही पढ़ाते हैं जो परीक्षा में आता है। इससे परीक्षा का परिणाम तो बेहतर होता है, पर सीखने की सीमाएँ बन जाती हैं। और इस सीमित पाठ्यक्रम के आधार पर सीखने-सिखाने का मूल्यांकन होता है। इस परिस्थिति में शिक्षक की जवाबदेही भी बहुत सीमित रूप ले लेती है– ख़ासकर, इस स्थिति में यह बात कहीं छुप जाती है कि हर बच्चा अलग है, अलग परिप्रेक्ष्य से आता है और अलग गति से सीखता है।

सिंगापुर में हर शिक्षक प्रत्येक साल के लिए कुछ लक्ष्य तय करता है और इन लक्ष्यों की प्राप्ति के आधार पर उसका मूल्यांकन किया जाता है। साथ ही, उसकी वर्तमान क्षमताओं का मूल्यांकन कर उसके व्यावसायिक विकास की योजना बनाई जाती है। इस मूल्यांकन में बेहतरी के क्षेत्र उभरकर आते हैं। ख़ासकर, हाल ही में नियुक्त शिक्षकों को प्रभावी शिक्षक बनने में सहयोग मिलता है।

न्यूज़ीलैंड, इंग्लैंड और स्कॉटलैंड में शिक्षकों की जवाबदेही एक रूपरेखा के आधार पर निर्धारित की जाती है। इस रूपरेखा में पूर्वनिर्धारित शिक्षण मानकों द्वारा शिक्षकों से अपेक्षाओं को स्पष्ट किया गया है। अलग स्तर और विषयों के शिक्षकों के लिए रूपरेखा अलग है। विद्यालय की जवाबदेही परीक्षा के परिणाम से निर्धारित की जाती है। परन्तु शिक्षकों का मूल्यांकन विद्यालय के भीतर ही उपयुक्त रूपरेखा के आधार पर किया जाता है। यह रूपरेखा पारदर्शी है और पूरी तरह से शिक्षकों से अपेक्षाओं को स्पष्ट करती है– कुछ हद तक, इस रूपरेखा के आधार पर, शिक्षक ख़ुद अपने कार्य का मूल्यांकन कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानकों (National Professional Standards for Teachers – एनपीएसटी) की बात रखी गई है। इन मानकों में हर विशेषज्ञता और स्कूली स्तर को लेकर शिक्षक से अपेक्षाएँ एवं दक्षताएँ स्पष्ट की जाएँगी। एक प्रकार से इन्हें शिक्षक की जवाबदेही चिह्नित करने का ज़रिया माना जा सकता है। शिक्षा नीति में यह कहा गया है कि एनपीएसटी में शिक्षक के 'प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए मानक भी शामिल होंगे, जो समय-समय पर किया जाएगा। इनके आधार पर शिक्षकों का कैरियर मैनेजमेंट होगा जिसमें कार्यकाल, व्यावसायिक विकास के प्रयास, वेतन वृद्धि, पदोन्नति और अन्य पहचान शामिल होंगी। कार्यकाल अवधि या वरिष्ठता के बजाय सिर्फ़ निर्धारित मानकों के आधार पर पदोन्नति और वेतन वृद्धि होगी।' हर दस वर्षों में व्यवस्था की गुणवत्ता का सख़्त आनुभविक विश्लेषण किया जाएगा और एनपीएसटी की समीक्षा की जाएगी।

नीति से पहले, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रारूप के लिए गठित कस्तूरीरंगन समिति ने और विस्तार में इस बात की व्याख्या की है। रपट में लिखा है :

यह मूल्यांकन स्पष्ट रूप से दर्ज किए गए शिक्षकों के कार्यों के तथ्य / प्रमाण पर होगा, जिसमें अनिवार्य रूप से स्कूल में उपस्थिति,

स्कूल रिकॉर्ड, कक्षा-कक्ष का अवलोकन, सहकर्मियों द्वारा समीक्षा और विद्यार्थियों की प्रगति शामिल होगी। स्कूल प्रबन्धन समिति की मूल्यांकन से सहमति होनी चाहिए।...

इस प्रक्रिया से शिक्षकों की जवाबदेही को भी निर्धारित किया जा सकेगा। शिक्षक स्कूल में शिक्षा के लिए क्या कर रहे हैं और क्या नहीं कर रहे हैं, उसके लिए वे विद्यार्थियों, अभिभावकों, समुदाय और जनता के प्रति जवाबदेह होंगे। शिक्षा प्रणाली में इससे पेशेवर निष्ठा और पारदर्शिता सुनिश्चित होगी। यह ध्यान देने की बात है कि सशक्तीकरण और स्वायत्तता सच्ची जवाबदेही की पूर्वशर्तें हैं और वहीं दूसरी ओर एक धमकाने / डराने वाला वातावरण गुणवत्ता का प्रतिरोधक है। एक ऐसी जवाबदेही व्यवस्था, जिसमें कुछ बातें समझौते योग्य नहीं हों और जो शिक्षकों में प्रभावी सुधार लाने में सहायक हों, सबसे प्रभावी ढंग से कार्य कर पाएगी। यह व्यवस्था शिक्षकों के सशक्तीकरण और स्वायत्तता को सुनिश्चित करते हुए जवाबदेही के विभिन्न कारकों को सुनिश्चित करेगी।

यह एक बहुत बड़ा बदलाव है, और ज़ाहिर है कि इतना बड़ा बदलाव लाना आसान नहीं है। इस प्रक्रिया में हर शिक्षक की जवाबदेही तय करके उसका मूल्यांकन करने की सम्भावना है। साथ ही यह सम्भावना भी है कि हर शिक्षक के कार्य को सम्मान दिया जाएगा, न केवल उपलब्धि के आधार पर बल्कि उनकी कोशिशों एवं व्यापक कार्यक्षेत्र में प्रदर्शन के आधार पर। कई प्रश्न भी उठते हैं– इस प्रक्रिया को विश्वसनीय और मान्य कैसे बनाया जाएगा? कौन इसमें शामिल होंगे? क्या शिक्षक स्व-मूल्यांकन करेंगे? क्या इस बात का मूल्यांकन भी किया जाएगा कि शिक्षकों को किस प्रकार का समर्थन मिल रहा है, उन्हें व्यावसायिक विकास के लिए क्या अवसर मिल रहे हैं? उनकी सेवा शर्तें कैसी हैं? क्या उनको पूरी सुविधाएँ मिल रही हैं? क्या उन्हें शिक्षणशास्त्र और शिक्षण सामग्री चयन करने की स्वतंत्रता है? क्या उनकी चुनौतियों का समाधान करने के लिए भी कुछ प्रक्रियाओं को स्थापित किया जाएगा? क्या हर शिक्षक के व्यावसायिक विकास के लिए कोई योजना बनेगी?

उम्मीद है कि इन, और अन्य कई ऐसे प्रश्नों के उत्तर हमें आने वाले सालों में मिलेंगे।

उपसंहार

शिक्षक की जवाबदेही उनकी क्षमताओं और मूल्यों का नतीजा है। साथ ही, एक जवाबदेह शिक्षक अपनी क्षमताओं को विकसित करने और अपने मूल्यों पर चिन्तन करने के लिए स्व-प्रेरित रहता है। यह अनिवार्य है, क्योंकि शिक्षक उसी शिक्षा प्रणाली से गुज़रे हैं जिसमें उन्हें बदलाव लाना है। इस बदलाव को लाने में जवाबदेही के साथ शिक्षकों का सशक्तीकरण अनिवार्य है। और यह शिक्षक समर्थन के वातावरण में मुमकिन है, जहाँ शिक्षकों को अपना काम करने के लिए समय और सहयोग मिलता रहे। इसलिए हमें शैक्षिक विचार विमर्श में जवाबदेही के अर्थ को नई नज़रों से देखना पड़ेगा, जिसमें न केवल शिक्षक के काम बल्कि उनके काम में पूरी शैक्षिक प्रणाली की भागीदारी को एक बार फिर से समझना पड़ेगा।

सन्दर्भ

1. Batra, P. (2005). Voice and agency of teachers. Missing link in National Curriculum Framework 2005. *Economic and Political Weekly*, October 1
2. Curtis, R. (2011). *Defining instructional expectations and aligning accountability and support*. www.nctq.org/docs/Impact_1_15579.pdf

3.. Department for Education and Skills (DfES). (2004). *Pedagogy and practice: Teaching and learning in secondary schools*. Norwich: DfES. Retrieved 4 May 2009 from www.standards.dfes.gov.uk

4. Eva L. Baker, E. L., Barton, P. E., Darling-Hammond, L., Haertel, E., Ladd, H. F., Linn, R. L., Ravitch, D.

5. Isoré, M. (2009), “Teacher Evaluation: Current Practices in OECD Countries and a Literature Review”, *OECD Education Working Papers*, No. 23, OECD Publishing. http://dx.doi.org/10.1787/223283631428
6. Jones, B. D., Egley, R. J. (2007). Learning to take tests or learning for understanding? Teachers’ beliefs about test-based accountability. *The Education Forum,* Vol. 71
7. Levitt, R., Janta, B., Wegrich, K. (2008). *Accountability of teachers. Literature review*. Cambridge: Rand Corporation.
8. Linn, R. L. (2012). *Test based accountability*. The Gordon Commission on the Future of Assessment in Education. Retrieved from www.gordoncommission.org/rsc/pdf/linn_test_based_accountability.pdf
9. Matthews, P. (2014). *Professional accountability*. London: The Schools Network.
10. Mourshed. M., Barber, M. (2007). *How the world’s best performing school systems come out on top*. http://www.mckinsey.com/~/media/mckinsey/dotcom/client_service/social%20sector/pdfs/how-the-worlds-most-improved-school-systems-keep-getting-better_download-version_final.ashx
11. Rothstein, R. Shavelson, R. J., Shepard, L. A. (2010). Problems with the use of student test scores to evaluate teachers. *EPI Briefing Paper 278*. Retrieved 10 July 2013 from www.epi.org/publication/bp278/

निमरत खंदपुर पिछले दस सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में कार्यरत हैं। वर्तमान में वह स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का हिस्सा हैं। वह शिक्षा नीति, शिक्षक शिक्षा एवं अध्यापन के क्षेत्र में सक्रिय हैं। शिक्षा के विषयों पर पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखती रहती हैं।

सम्पर्क : nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org